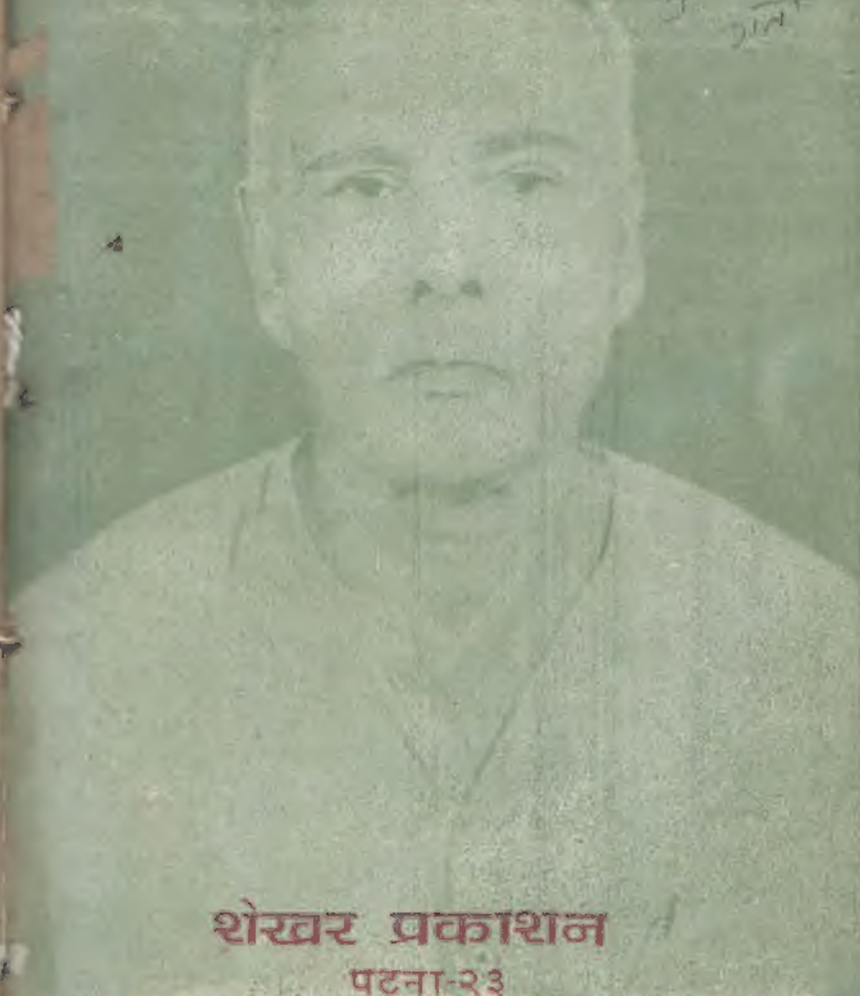
शेखर रचित

गजल ओ गीत



शेखर प्रकाशन

पटना-२३

गजल ओ गीत

पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी
(साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित)

प्रकाशक :
शेखर प्रकाशन
टेक्स्टबुक कॉलोनी, इन्द्रपुरी, पटना-२३

* मुद्रक एवं प्रकाशक :
शेखर प्रकाशन
टेक्स्टबुक कॉलोनी
इन्द्रपुरी, पटना-२३

* प्रथम संस्करण
श्रावणी पूर्णिमा
अगस्त, १९९१

मूल्य : ११/- (एगारह) टाका मात्र

शेखर रचित :

गजल ओ गीत

SHEKHAR RACHIT

GAJAL-O-GEET

प्रकाशकीय

मैथिली साहित्य मध्य पं० सुधांशु 'शेखर चौधरी एकटा एहन हस्ताक्षर [illegible] जनिक परिचय देब एकटा छुछुन प्रयास होयत। तथापि कोनो पोथीमे [illegible]कारक प्रति प्रकाशकीय दृष्टिकोणे दू शब्द कहब कर्त्तव्य भऽ जाइत छैक [illegible] एहिठाम किछुए शब्दमे हम अपन कर्त्तव्यक निर्वाह करय चाहब।

[illegible]खर जी एकटा महान उपन्यासकार, नाटककार, कथाकार, कवि, आलोचक-[illegible], सम्पादक-पत्रकार, अभिनेता-निर्देशक छलाह आ मैथिली साहित्य एवं [illegible] समाजक बीच आर कतेको कारणे लोकप्रिय छलाह मुदा हमरा लेल ओ [illegible] हमर पिता छलाह आ तेँ हम एहिठाम मात्र पितृकर्त्तव्यक निर्वाह भरि कऽ [illegible] अछि। इच्छा छल जे हुनक स्मृतिमे किछु अविस्मरणीय काज करी [illegible] से एखन धरि संभव नहि भेल अछि। तथापि हुनकहि स्मृतिमे हुनकहि [illegible] नाम 'शेखर प्रकाशन'केँ (शेखर प्रकाशन, मुद्रक एवं प्रकाशककेँ साकार [illegible] कऽ) केँ पुनर्जीवित करबाक प्रयास कयल अछि।

[illegible]खर प्रकाशन एखन बालरूपमे अछि आ बाल्योचित गुणक अनुरूप बहुत [illegible] करबाक लौल कऽ रहल अछि। मुदा साधनक अभाव, अनुभवक कमी [illegible] नेनमतिसँ वशीभूत भऽ जेना-तेना 'शेखर' जीक किछु गजल एवं गीतक [illegible] बहार कऽ मैथिली साहित्यक अनुरागीलोकनीक आशीर्वादक अभिलाषी [illegible] एवं एहि संग्रह रूपी प्रथम पुष्पकेँ ओहि महान आत्मा (शेखर)केँ समर्पित [illegible] अछि जनिक नाम ओकर सफलताक अवलम्ब छैक।

—शरदिन्दु कुमार चौधरी

खोलि हृदयक द्वार बैसल छी

प्रतीक्षामे हुनक हम खोलि हृदयक द्वार बैसल छी,
समय खसलहुँ ने करबे आइ हम मनुहार बैसल छी।

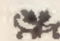
जो आबथि आर घुरि नहि जाथि तत्पर सजग इन्द्रिय-मन
रचा स्वागतमे लाखो यत्नसँ श्रृंगार बैसल छी।

हुनक सुधि-गन्धमे मातल, मिलनकेर आससँ जीतल,
सिनेहक हाथमे लेने मधुर उपहार बैसल छी।

जखन हल्लुक बसातो खँ हुनक पदचापकेर भ्रम हो,
बोटेको पात खसने तनक झनझन तार बैसल छी।

उठैए अनेरे शंका किए मनमे न हम जानी,
असह सन भेल जाइत अछि विलम्बक भार बैसल छी।

जे आबथि से असम्भव अछि, एहन नै निठुर निर्मोही,
जो अपने हाथ पहिरौता मरणकेर हार बैसल छी।



मुसकी भरल स्नेह दियऽ

एते पैंष दुनियामे एकसरे चिन्हार अहाँ,
जिनगी भरि कयलहुँ बहुतो उपकार अहाँ।

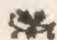
छुच्छ हमर हाथ, परसि, अहाँ देलहुँ अपन हाथ,
एकारक जिनगीकेँ कयलहुँ द्विकार अहाँ।

फूटे-फुट उपवन मे फुट-फुट छू फूल छल,
गरा हार अन्तरकेँ कयल एकाकार अहाँ।

धार अपन नैहरसँ विदा भेल सागर दिस,
बाटक पियासलकेँ कयलहुँ उद्धार अहाँ।

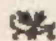
आकाशक चान प्राण गेल दूर बहुत दूर,
हमर नयन-धरतीकेँ कयलहुँ अन्हार अहाँ।

इच्छा अछि अन्तिम ई अन्त बेर पूर करी,
मुस्की भरल स्नेह दियऽ बाँहिक पसार अहाँ।



अहाँ बिनु नहि बनय एको पहर

...नि डुबबैए अथाहो-थाहमे,
मुदा जल बिनु नहि बनय एको पहर।
...दा घोखा एक-एकक चालिमे,
मुदा संग बिनु नहि बनय एको पहर।
...विष्यक की होयत से चिन्ता ने थिक,
मन रमल अपने विगत इतिहासमे।
...िन्दगी ऊषब सहज अछि, सोझ अछि,
मुदा रस बिनु नहि बनय एको पहर।
...न्हा गेलहुँ पहिल प्रेरक स्नेहमे,
विवश भऽ गेलहुँ अहाँक गछार मे।
...ुदा चुकलहुँ अपन एका विश्व सँ,
मुदा सुधि बिनु नहि बनय एको पहर।
...है छी भसिआयल सदिखन सोह मे,
काज नहि दोसर कोनो संसार मे।
...हिक इच्छेँ विदा कयलहुँ रोचसँ,
मुदा अहँ बिनु नहि बनय एको पहर।
...रि रहल तन-मन वियोगक धाहसँ,
कतहु नहि पाबी सुशीतल छाँह हम।
...नक बड़का थार परसल सामने,
मुदा जन बिनु नहि बनय एको पहर।



हृदयक सिनेह

देखने रही हम स्वप्न एक आइ भोरमे,
हृदयक सिनेह उझिलि अहाँ लेलहुँ कोर मे ।

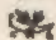
मृदु आङ्गुरक स्पर्श नेहाल कऽ देलहुँ,
हम धन्य भऽ गेलहुँ अपन जिनगीक छोर मे ।

ठोरक अहाँक मुस्की मने जादू कऽ देलक,
मादक तरंग जागि उठल पोर-पोरमे ।

हा हन्त, मुदा निन्द हमर छीनि के लेलक,
सौभाग्य केँ बदलि देलक के नोर-झोरमे ।

सुधिमे बताह भेल सगर घूमि रहल छी,
के देत हमर स्वप्न पुरा विश्व-सोर मे ।

बन्धु सुख न, मृत्युएटा माङि रहल छी,
क्यो देत नहि से जनै छी दुनियाँक जोरमे ।



अवधारि बैसल छी

लगैए मन ने कनियो काल जीवन हारि बैसल छी,
अपन उद्यान अपने हाथसँ हम जारि बैसल छी ।

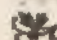
कतेको साङ्हे सतरल लता आकाश चूमै छल,
कि खौलल पानि फूलक बेरमे हम ढारि बैसल छी ।

कतेको यत्नसँ पोसने छलहुँ हम मधुरतम सपना,
अपन अभिलाष छोर लहासकेँ हम गाड़ि बैसल छी ।

बसाबी घर लगाबी आगि से जिनगी ने थिक जिनगी,
अपन संहार पर हम दीप लाखो बारि बैसल छी ।

छँटैए लोक बड़ उपदेश, संयत करी अपना केँ,
जँ मरबे अछि चरम गति रहओ हम अवधारि बैसल छी।

सुखक वादा जे हमर छल से एखनो कायम अछि ओहिना,
प्रियक मुँहमे लगाबऽ ऊक आगि पजारि बैसल छी ।



सहबाक जे सन्ताप अछि

कहबाक अछि जे बात से परचारि कहै छी,
सहबाक जे सन्ताप अछि, मन मारि सहै छी।

ओहि दिन, मुनहारि साँझमे चुपचाप चलि देलहुँ,
सुनसान से अड़कालमे हियमारि रहै छी।

कहने रही सभ दिनक लेल संग छी अहाँ,
एकसर छताह धारमे मझधार बहै छी।

प्रत्यक्ष नै, सपनोमे अहाँ आबि जँ जैतहुँ,
उन्निद्र पड़ल, रोग हम लाचार गहै छी।

छौ राति निशाभाग आ घनघोर अन्हरिया,
अस्तक सुरुज हत भाग एक परतार ढहै छी।

कुकुरोकेँ कारा दऽ कऽ क्यो पुचकारि लैत छै,
हम छी अनेरा द्वारि सभ दुत्कार सहै छी।



सुनसान पांतरमे

मुधिये हुनक मोनक हमर श्रृंगार बनल अछि,
जिनगीक ओ रोगक हमर उपचार बनल अछि।

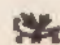
काँटक भरल झंखारमे ओझरायल छी जखन,
फूले हुनक गन्धे हमर आधार बनल अछि।

सुनसान पाँतरमे जखन अपस्याँत भेलहुएँ,
छाहरि हुनक मधुवातकेर संचार बनल अछि।

बड़ प्यासेँ तबधल जखन हम ओंट भेल छी,
मुस्की हुनक अभ्यासमे रसधार बनल अछि।

कोड़ो गनैत आहिमे हम राति बिताबी,
सपनाक एक मधुरतम संसार बनल अछि।

जोही कते हम बाट से फड़िछा लियऽ कने,
चलते न नाम तार ई लाचार बनल अछि।



खाली चिनमार हमर

बजैए संगीत बिना जीवन-सितार हमर
लागय मशान-सून आङन-घर-द्वार हमर ।

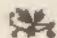
अनधुन हम पड़ल खाट कोड़ोमे आँखि टेकि,
अछि के बीमार मनक करते उपचार हमर ।

प्यासे हम आल-याल धार बड़ दूर घाट,
बुझ दरस-परस नै, खाली चिनमार हमर ।

दूरागत वंशी धुनि झीकि रहल हमर प्राण,
जायब तँ जायब कोना, डेग बेसम्हार हमर ।

रहब कतहु दूर कात अछि के जे टाहि देत,
पच्छी बे आबय एक धधकैए चार हमर ।

पाहुन तँ पाहुन छल बटकि गेलै कतहु चित्त,
बात-बातमे अन्हार, लूटल संसार हमर ।



पूरल ने एको आस हिया

जे गीत भेटल भासमे, बट गाबि लेलहुँ हम,
संगीत रचब सोझ नै, मुँह बाबि देलहुँ हम ।

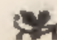
देखल ने बाट हाटकेर हम पयर बढ़ीलहुँ,
ठमक अनेर कष्ट मुदा पाबि लेलहुँ हम ।

सुनने रही सिनेह बड़ पेंच छै सम्बल
गप्पो ने करब आब मुँहे जाबि लेलहुँ हम ।

पोसब बड़ अधलाह थिक जनमार सेहन्ता,
पूरल ने एको आस हिया दाबि लेलहुँ हम ।

अगुआ बनब सभ बातमे नीक नै होइ छै,
काते रही, काते चली, से भाबि लेलहुँ हम ।

व्यर्थे डेंगायब पानी तेहन काज नै छै काज,
जिनगीक ने उपयोग ततऽ आबि गेलहुँ हम ।



जिनगी पहाड़ भेल

की भेल अछि अन्दर ने कने मोनं लगैए,
सुलफा जकां करेज मे दिन-राति गड़ैए।

ओ दिन छलै, पहाड़सँ भिड़ि जाइत रही हम,
डेभो धरब जे थाहिकऽ बड़ भार लगैए।

जकरा छलै दरेग से रुसि गेल ने कहियो,
मनाकऽ आनि लेब से न भाँज भेटैए।

माने सभक लै देह ई दिनराति गलल छल,
अनठा देलक—हमछी, ओम्हर रंगताल करैए।

जिनगी पहाड़ भेल, ने टपनाइ ई सहज,
धारक कछेर, प्याससँ ई जीह सटैए।

खयलहुँ बड़ खयबाक छल अनुभव पका-पका,
पाकल सनक जे आम, चूसि, दूर फेंकैए।

कहैत अछि सभ लोक जे भगवान छथि कतहु,
लक्षण ने तकर, आस ओ विश्वास धसैए।



जानि अहाँ करबे की ?

हमर घाव हमरे अछि, जानि अहाँ करबे की ?
दर्द बड़ जोरक, अनुमानि अहाँ करबे की ?

विपतीपरक नाच अपन अपने टा देखने रही,
कोढ़क ऐ ऐंठनकेँ छानि अहाँ करबे की ?

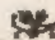
हाथक जे मोती छल अनचोके हेरा गेल,
केहन बेपानि भेलहुँ, पानि अहाँ करबे की ?

भितरक कोलाहलसँ उजगुज ई मोन व्यथित,
धारक ओहि पार प्राण, फानि अहाँ करबे की ?

भोरक ई चान केहन, लागय अन्हार जकाँ,
मुरुजक इजोतकेँ बखानि अहाँ करबे की ?

देखल अछि सूमल अछि, सभ तयूक सीमा छै,
जिनगी असीमतम उवानि, अहाँ करबे की ?

बौआयल कते छी, बौआयब आर बाकी अछि,
बाटे जँ अन्त होअय, कानि अहाँ करबे की ?



अथाह ई सागर

नहि बूझि रहल छी किए हम जीवि रहल छी,
जे फाटि चुकल केथरी किए सीवि रहल छी।

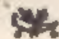
छल मनमे भेल, डूबि लेब सोझ अछि, चान,
हाथे बढ़यबाक ताओमे हम जीवि रहल छी।

मरुभूमि बीच देहरि आ भाँय—भाँय—भाँय,
खाली गिलास सेप अपन पीबि रहल छी।

नहि सूझि रहल बाट आ अथाह ई सागर,
नहि होयत कयल पार पाल झीकि रहल छी।

छल संगी जे एक सेहो छोड़ि पड़ायल,
लखि कोन एहन व्यर्थ देह नीरि रहल छी।

नहि बूझि रहल छी किए जीवि रहल छी,
जे फाटि चुकल केथरी किए सीवि रहल छी।



चुप्पी मारि बैसल छी

काटि लियऽ जिनगी कोना, समयतँ कटने न कटय,
की हमर सहजें उचाट कतबो ई हटने न हटय।

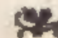
चुप्पी मारि बैसल छी कहूँ की ने आबि जाथि,
नमहर जे प्रतीक्षा अछि, कतबो छटौने ने छटय।

सनेस दऽ कऽ गेल छथि, राखी तँ कतऽ राखी,
ओकर छोट बबूर ढेर, कतबो अँटौने न अँटय।

मोन तँ छिड़िआयवला बतमारि कोना राखब हम,
जीवनक ई सौदा केहन कहुना पटौने न पटय।

मीठ मीठ दर्द होअय, राइसँ से ताड़ भेल,
लाख हम उपाय करी उपचार भेटने न भेटय।

जिनगीकें काछि कोना देहसँ हम दियऽ फेंकि
छोट सनक हिया अकर कतबो ठठौने न ठठय।



हेरा गेल अछि

संजोगल छल बड़े यतनसँ, हेरा गेल अछि
मनक भाव गम्भीर चोटसँ नेरा गेल अछि।

सोनित आर पसेना सँ सिचलहुँ फुलवारी,
निर्दय हाथेँ हुऽर ताहि पर फेरा गेल अछि।

बड़े आगि छल धहधह सदिखन जरिते अयलहुँ,
मेघक पत्थर खसिते सभटा सेरा गेल अछि।

एकसरुआकेँ नै होइत छै कोनो सपना,
दुखक काँटसँ आकुल मन ई, घेरा गेल अछि।

नै खसैत अछि बज्र साइत जँ हम छुतहर छी,
मृत्यु कठोर हमर जीवनकेँ बेरा गेल अछि।

नहि अबैत अछि लज्ज केओ कुशलो टा पूछऽ,
हम अशुभक अवतार, विश्व मन डेरा गेल अछि।



उपहास बनल छी

[illegible] भन्कि लोककेर उपहास बनल छी,
पशुओ ने मुँह लगा सकय निघास बनल छी।

स्नेहक बढ़ौलहुँ हाथ तँ चट बज्र खसि पड़ल,
फूल छै भाग जकरे से हताश बनल छी।

[illegible]री ने निबहि सकल क्षणक रौद-पानिमे,
निर्जन मसान बीच दुखक रास बनल छी।

सपनो ने सुखक भान हमर शाप अछि कतऽ,
बेलो-बबूर उगि ने सकय घास बनल छी।

चाहत अछि पूछल समयपर आक आ धथूर,
कूनो ने फूल अधम अमलतास बनल छी।

[illegible] ने टोकय लोक, अपन नीक जँ चाहय,
भारी अलच्छ खापड़ि अशुभ ग्रास बनल छी।



विश्राम टा चाही

अपने बैसाहल बाटसँ घेरा रहल छी हम,
अपने लगाओल काँटसँ बेरा रहल छी हम।

बचनक ने एतबे अर्थ जे क्यो आन कऽ देखय,
अहाँक घुघून मूँहसँ डेरा रहल छी हम।

अहींक बमहर जीहकेर अन्ते ने हम पाबी,
श्रम शक्ति व्यर्थे पानिमे हेरा रहल छी हम।

आबो तँ चैन लेबऽ दिय, हाथ जोड़ै छी,
बड़दे जकाँ तँ राति-दिन पेरा रहल छी हम।

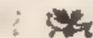
सभ छी अहाँ, व्यवहार मे मनुखे टा तँ नै छी,
जिनगीक झंझावातमे बेरा रहल छी हम।

सत्ये कही, एहि वयसमे विश्राम टा चाही,
चिन्ताक घारी मे भीड़ रेड़ा रहल छी हम।



गजल व्यंग्य

धन्य अहाँ, धन्य अहाँ अपने फकैत छी,
जानी थोड़ी घास नहि बौरबे फटैत छी।
अपन गोल, अपन ढोल अपन बोल मीठ महा,
आन यदि नीक कहय तकरो कटैत छी।
अपने प्रशंसामे समय बरु बीति जाय,
आन यदि टोकि देलक तकरा हटैत छी।
धयलक छपास रोग आर किछु करबे नहि,
अपन लेर बूकल जँ अपने चटैत छी।
ई नहि देखब जे लोक की कहैत अछि,
की आर केहन अहाँ दुनिया जनैत अछि।
लाज जे बिलायल अछि सभ ठाँ हटैत छी,
बेघर आ हेहर जकाँ अपने छँटैत छी।
अपन सूर झाँपि भूर सभकेँ सप्त कही अहाँ,
अपनेकेँ उछालि ले सचिखन खटैत छी।



फरकि उठय आँखि

फरकि उठय आँखि अखन चिन्ता हो बेसम्हार,
दरकि उठय कोंढ़ कने मनमे अबिते सुमार।

मीठ केहन मिलन-राति क्षण भरिमे ससरि जाय,
एकसरक समय तीत दिनमे लागय पहाड़।

फूलक रस रूप गन्ध मोहि लेअय ज्ञान-प्राण,
काँट चुभन पीर गहन प्राण हो तनसँ बहार।

अहँक दरस बरस-बरस सीमासँ भेल दूर,
सपन सरस दिन-दिन भरि सूलय-सालय हजार।

गेलहुँ जहाँ गेलहुँ भलें, हम रहलहुँ बीच बाट,
आगाँ किछु देखल नहि, जन-जन रेड़ल बजार।

हमछी भोतिआयल जकाँ सड़क कात गुम्म ठाढ़,
भेटय चिन्हार बते भीतरसँ अनचिन्हार।



हृदयकेर तार छिनायल

हुनका विदा होइते हमर घर द्वार छिनायल,
छोटे सनक संसार छल भकरार छिनायल।

हुनिने कटैं छल बाट दूरक घाट सहज छल,
हुनका बिना जीवन-सफर आधार छिनायल।

फूलक हमर उद्यानमे जे फूल अछि निर्गन्ध,
गन्ध-रूप रचना, सभ ओकर आकार छिनायल।

दिन राति बिड़रो बीच हम औनाइ छी सरिपहुँ,
मधु स्वप्नकेर मधुवासकेर आगार छिनायल।

बाम पर चालित हमर छल डेग तँ निस्सन,
से कण्ठ, स्वर-लहरी, हृदयकेर तार छिनायल।

जेहनो कठिन संघर्ष हो अड़ले रही मुदा,
हुनके अभावमे हमर रसधार छिनायल।



दम तोड़ि रहल छी

युगसँ पड़ल अथाहमे दम तोड़ि रहल छी,
भाग्ये फुटल जें माथ अपन फोड़ि रहल छी।

दुर्दिनक फेरमे सदा हम काहिये कटलहुं,
त्राणक कोनो जोगाड़ हम ह्थोड़ि रहल छी।

लीखल रहैत नीक सँ संगे किए छुटैत,
दुःखेक भीत, जाल फँसल, जोड़ि रहल छी।

यशमे हमर नै मोन एको पहर एको क्षण,
विधि केर उसाहल डाक पीठ ओढ़ि रहल छी।

बैसल छी छाउर-ढेर जे इच्छाक भूत अछि,
अपने लगाओल आगि अपने खोरि रहल छी।

संसार भरि सन्ताप हमरे भाग पड़ल छल,
हुकहुक करय ई प्राण ऐखन छोड़ि रहल छी।



निराश नै करब

[illegible] ओछौने बाट छी निराश नै करब,
[illegible] सन अधार छी हताश नै करब।

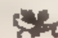
[illegible]ोर उठै छै हृदय-मन डोलि रहल अछि,
[illegible] हँसि पार अहाँ बास नहि करब।

[illegible]नें अहीक काँट-कुशक कष्ट गिड़ै छी,
[illegible] आतुर चित्तकें उदास नै करब।

[illegible] उठल विकाल मेघ छारि लेने छै,
[illegible] करेज प्राण हमर नाश नै करब।

[illegible]ँ बचौने आयल छी एक्खे सनक जिनगी,
[illegible] व्यर्थ झाँटमे विनाश नै करब।

[illegible] घोर ठनकसँ रहि-रहि हिया हहरय,
[illegible]नक उताहुल अंग, भंग आश नै करब।



दर्द तेहन होइए

दर्द तेहन होइए जे शब्दें हम कहि ने सकी,
अन्हार सून घरक गाढ वेदन मोने-मोन सहि ने सकी।

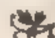
ठूठ गाछक छाहू सनक हमर सपन बाझि रहल,
ठाढ़ जे बसात केहेन उपवन देने बहिने सकी।

फाटि गेलै पाल जकर धार कोना पार करय,
भसिआइत एकसर हम धार माँझ रहिने सकी।

स्नेह निराकार बनल शून्यमे प्रयाण कयल,
जे किछु अछि शेष बचल तकरा हम गहि न सकी।

अपन जे संजोगल छल असमयमे भस्म भेल,
पाथर ई सुभ देह धधरोमे डहि ने सकी।

ओकर की भविष्य जकर जीवन अतीत भेलै,
ऊँच ठाढ़ खँडहर भूमिकम्पोमे ढहि ने सकी।



स्नेहे टा नै करी

स्नेह ! तेज केहन ओकर धार लगै छै,
अबाध सन करेज आर-पार लगै छै।

नदिखन हेरायल जकाँ मोन-प्राण जे रहै,
आठो पहर उदास मन बीमार लगै छै,

सपनाक जाल जोड़ि राति बितावय।
जिनगीक आन बात सभ बेकार लगै छै,

जे देलक अपन हृदय अपन ठाम गमौलक।
पुतली सनक जे तिल छलै से ताड़ लगै छै,

ठोरक हँसी बिला गेलै हुलास चल गेलै।
पिपनीक नोर ढरकि कऽ अमार लगै छै,

सभ किछु करी जहानमे स्नेहे टा नै करी,
जे कऽ चुकल जीवन ओकर पहाड़ लगै छै।



मीठ-मीठ दर्द हमर

मीठ-मीठ दर्द हमर तीत—तीत मोन
दिन-देखार हेरा गेल हमर हियक सोन।

बिजुरी तँ चमकैए कतहु नै घटा
खाली अछि, सुक्खे अछि हमर हृदय-कोन।

बेढ़ल फुलवारी अछि फूलक नै पता
गाछ नै बिरछ नै उपटल सन बोन।

साञ्झ अछि पानि अछि कतहु ने लता,
दुनियामे छथि नै ओ मानय ने मोन।

देखलहुँए, देखै छी झुनकर ओ छटा
आँखिमे नुकायल सन हमर मीठ सोन।



सुखद सन स्पर्श

जँ निर्जन प्रान्तमे एक बेर हुनकासँ भेट भऽ जाइत,
अनायासे करेजक भार हल्लुक बहुत भऽ जाइत।

दुखक संसारमे भारी बसातक उठैए झोंका,
हुनक अयने हजारो काँट सहसा फूल भऽ जाइत।

ओ बैसल दूर हमरासँ किए जी-जान दुखबै छथि,
ओ अबितथि, जोगाओल सपना अनेरे पूर भऽ जाइत।

बिताबी दिन उछभरमे सही उत्पात रजनी भरि,
युगक झुलमल हमर ई कण्ठ किछु मधुपान भऽ जाइत।

कटैए छन पसाहीमे बितैए पहर धधरामे,
जमह एकान्त, किछुओ काल ले तँ त्राण भऽ जाइत।

ने अओता से जनै छी की लिखल अछि भाग्यमे हमरा,
सुखद सन स्पर्श सँ छनमे हमर जँ अन्त भऽ जाइत



चमचा-चमत्कार

काज कोनो काज नहि, काज थिक प्रचार,
भात-दालि भकसब अछि, असल अछि अचार।

नेता अभिनेता सँ खसैत अछि, छँटैत अछि,
असल थिक छोट-पैघ चमचा-चमत्कार।

जे गुण अछि मक्खन मे नहि अछि से आन,
लोढ़ि लियऽ हँसोथि लियऽ हजार पर हजार।

रेडियोक चमचा कंट्राक्ट सोझ डांरि,
चमचेक लेख छपथि बीच अखबार।

जे न करथ बुद्धि काज, करथ चमचवान्,
चमचाक प्रबल ऐ युगमे सुजल अछि बाजार।

चमचायल जते लोक तकरे मैदान,
हे चमचा, हमर लियऽ सोझ नमस्कार।



नोर

[illegible] नहि थिक लपकैत आगि थिक नोर,
[illegible] बरिसैत अछि एक दिन धधकैत अछि नोर।

[illegible] नहि, उपजैत आक्रोशक चिनगी थिक,
[illegible] नगरक नगर डाहैत अछि नोर।

[illegible] वात्सल्यक, सिनेहक नहि थिक अभिव्यक्ति,
[illegible] संसारकेँ भसिया दैत अछि नोर।

[illegible] जे चुबैत अछि से नाटक थिक टाटक थिक,
[illegible] उनटबैत आयल अछि बान्हल नोर।

[illegible] नहि जे अबलाक आँखिसँ झहरैत अछि,
[illegible] देखा कऽ जे रहैत अछि से थिक नोर।

[illegible] नोर मे ढाल आ तरुआरि होइत अछि,
[illegible] जे कसमस करैत अछि से थिक नोर।

[illegible] बेकारी मजूरक बेसारी नहि थिक,
[illegible] से भिड़ि जाइत अछि लड़ि जाइत अछि नोर।



दोकठमे लसकल प्राण

बताह मोनक नहि कतहु घरद्वार होइ छै,
सभसँ फराक, निज ओकर संसार होइ छै।

बसात जँ उमताइए तँ करैए प्रलय,
सुधिकेर चलल हिलकोर बेसम्हार होइ छै।

नेहक गछाड़ल लोक अवश दीन होइए,
आठो पहर लय नयनमे जलधार होइ छै।

जे दौड़िकऽ चलय ठेसाय बात-बात मे,
बैसल रहय जे प्राण ओकर भार होइ छै।

भोतिआयल जे कखनो सिनेहक गहन बोनमे,
एक-एक छनक काट बड़ जनमार होइ छै।

जँ हीत नै, जँ मीत नै तँ जीव अछि केहन,
दोकठमे लसकल प्राण बड़ बेकार होइ छै।



गोलैसी

[illegible] जे सार अछि, व्यापार गोलैसी,
[illegible] चरिक सभ कारमे सुख-सार गोलैसी।

[illegible] संसारे अति भोगमे सभठाँ जे अछि हूसल,
[illegible] जे निश्चय राखल अछि उद्धार गोलैसी।

[illegible] सकी, घऽ ने सकी, लऽ ने सकी किच्छु,
[illegible] अटहि फांड़ घऽ करय उपकार गोलैसी।

[illegible] नहि चलय आ कि डेग बढ़य एक,
[illegible] सब किछु देअय अनिवार गोलैसी।

[illegible] कुच्छे पाकि कऽ ने लोभ आर लाभ,
[illegible] कन्हु न भेटय, भेटय दरबार गोलैसी।

[illegible] सँ बाड़ पुण्य-स्थल बडका टा बनल अछि,
[illegible] बनतऽ चलि ने सकय चमकार गोलैसी।

[illegible] पहाड़ खसय आ मरि जाय बड़ अयोध,
[illegible] हैन्द बड़े जोरसँ ललकार गोलैसी।




गीत

आन्हर ई संसार

राति अन्हरिया अन्हर बाटपर आन्हर ई संसार ?

कलुषित इच्छाकेर मोरीमे सह सह करै नङरिया,
सद्इच्छा जिनगीक मोहारपर मारै छै ओंघरड़िया।

अकिलक ओर कतऽ भोतिआयल छै न तकर किछु पता,
अज्ञानक मेघक लपेटमे नुकल ज्ञान-बिजुलता।

लटपटायल छै पाँखि सभक तँ करतै के उद्धार ?
राति अन्हरिया······ अन्हर ई संसार।

आइ बेंगतीकेर पेठियामे बढ़ल-चढ़ल छै हूलि,
जकरा हाथ भरल छै झोंआ से सुख कीनय बूलि।

भीतर खुक्ख थैल बासन तेँ ढनमनाइये सदिखन,
भरल अशर्फीसँ कलशा की ठनमुनाइये कोखन ?

जकर तराजू पासङ तकरे आइ चलै व्यापार।
राति अन्हरिया ······ आन्हर ई संसार।

सोझ न, जिनगी आइ बनल छै सतरंजक टा खेल,
टेढ़ चालियेँ होइत रहै छै घोड़ा फर्जीक मेल।

सोझ बात जे धरय, कहै तकरा सभ, अछि ढहलेल।
सोझ बात जे बाजय, बूझल जाय बुद्ध, बकलेल,

आजुक युगमे बुद्ध बुद्ध नहि, बुद्धू बनय हजार।
राति अन्हरिया अन्हर बाटपर आन्हर ई संसार।



ई देश ककर ?

ई देश ककर ? ई कोस ककर ?
जे पेटे टा ले जीबि रहल, जे अपने गुदड़ी सीबि रहल,
से देशक महिमा की जानत, जे स्वार्थक आसव पीबि रहल।
क्यो करय न रंच भरोस जकर
की देश तकर ?

अपने समाजकेँ नग्न अंग, टूटल-भाङल अपने अलंग,
अपने शरीर बनले अपंग, अपने समाजकेर अंग भंग।
तैयो सङोरमे जोश जकर
की देश तकर ?

मुँहगरकेँ ऊँच मचान जतऽ, लुरिगरकेँ ऊँच मकान जतऽ,
नेहगरकेँ घी पकवान जतऽ, अवसर सभ हेतु समान कतऽ।
जे मुँहसच, सभटा दोष जकर
की देस तकर ?

जे सत्ता टा ले मारि करय, रहि-रहि बिल्लीक बेहारि करय.
से कथा विकासक की जानत, जे दिन अछैत बटमारि करय।
बड़का-बड़का उद्घोष जकर
की देश तकर ?

जकरा अन्तरमे राष्ट्रभक्ति, छै सहज सिनेहक अतुल शक्ति,
देशक कण-कणकेँ अपन बुझय, लुटबय सदिखय देशानुरक्ति।
देशक उन्नतिये कोष जकर
की देश तकर ?



सामाक तानमे

थान-दीप बारि आइ बैसलि के धानमे,
हरियर परिधान मे।

ज्योति-स्नात सभ अलंग,
धवलित तन-मन अभंग,

हरित वर्ण रोम-रोम ठाढ़ कफर ध्यानमे,
उज्जर मुसकान मे।

कासक नव चास-बास,
भेँटक उज्ज्वल विकास,

छिड़िआयल सिङरहार हास थान-थान मे,
गन्ध प्राण-प्राण मे।

दूरागत वंशी धुनि,
प्रीति-अतिथि-आगम गुनि,

ढारि रहल शीतक समाद कान-कान मे,
रातिक अवसान मे,

श्वेत हरित भुजा-बन्ध,
एकाकृत रंग-गन्ध,

शरदक अबन्ध भाव उमड़ि चलय गानमे,
सामाक तानमे।



अनभुआर ई बाट

मोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट,
चनमत डेग, बढ़य तँ कोमहर सूझि ने रहलै घाट।

थाकल-ठेहिआयल छै जीवन,
छिछिआइत बीतल छै यौवन।

चलल निरन्तर, रुकल ने कहियो, आइ मुदा अछि औंट,
बौतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।

जनारण्यसँ घेरल-बाड़ल,
रहल सदा ममतासँ छारल।

कुदा अपन सन कतहु ने किछुओ, अवसादक टा हाट,
बौतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।

अन्धकारमे जे इजोत सन,
से भगजोगनी केर मोत सन।

लत-जताकेर गहन जालसँ टूटय सहजेँ टाट,
बौतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।

चिर सफलता टा संजोगल,
निघटि चुकल छै सकल मनोबल।

कहबेँ नहि, रङ-रभसोसँ सहजेँ चित उचाट,
बौतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।



सामाक तानमे

धान-दीप बारि आइ बैसलि के धानमे,
हरियर परिधान मे।

ज्योति-स्नात सभ अलंग,
प्रवलित तन-मन अभंग,

हरित वर्ण रोम-रोम ठाढ़ ककर ध्यानमे,
उज्जर मुसकान मे।

कासक नव चास-बास,
भेँटक उज्ज्वल विकास,

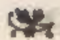
छिड़िआयल सिङ्गरहार हास थान-थान मे,
गन्ध प्राग-प्राण मे।

दूरागत वंशी धुनि,
प्रीति-अतिथि-आगम गुनि,

ढारि रहल गीतक समाद कान-कान मे,
रातिक अवसान मे,

श्वेत हरित भुजा-बन्ध,
एकाकृत रंग-गन्ध,

मरदक अबन्ध भाव उमड़ि चलय गानमे,
सामाक तानमे।



अनभुआर ई बाट

थोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट,
थलमल डेग, बढ़य तँ कोमहर सूझि ने रहलै बाट।

थाकल-ठेहिआयल छै जीवन,
छिछिआइत बीतल छै यौवन।

चलल निरन्तर, रुकल ने कहियो, आइ मुदा अछि औंट,
थोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।

जनारण्यसँ घेरल-बाढ़ल,
रहल सदा ममतासँ छारल।

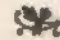
मुदा अपन सन कतहु ने किछुओ, अवसादक टा हाट,
थोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।

अन्धकारमे जे इजोत सन,
से भगजोगनी केर नोत सन।

झाड़-लताकेर गहन जालसँ टूटय सहजेँ टाट,
थोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।

चिर सफलता टा संजोगल,
निघटि चुकल छै सकल मनोबल।

थकबे नहि, रड-रभसोसँ सहजेँ चित उचाट,
थोतिआयल सन विकल बटोही, अनभुआर ई बाट।



जे छी अहाँ सतत हमरे छी

जे छी अहाँ, सतत हमरे छी, मन होइछ अनुमान,
अहिंक गन्धसँ मँह-मँह करइछ हमर बेआकुल प्रान।

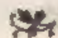
विश्व-नदीमे एमहर-ओमहर भसिआयल ई नाव,
जखने जनहि कात ई लागय, लागय अहिंक लगाव।

मानक आसन पाबि होअय अछि हमर पीठपर हाथ,
अपमानक गरदनियाँ लागय, अहिंक झुकाओल माथ।

नीक-बेजाय क्षणक दीयठिपर अहिंक सिनेहक टेम,
अहिंक देल ई संचित धन अछि, अछि खिपटा वा हेम।

अहिंक स्वरेँ बाजी जे बाजी अटपट तोतर बोल,
अहिंक सुनाओल सुनी, बुझी, अछि ओना हमर की मोल।

अहिंक आसपर, अहिंक भासपर चालित अछि ई यान,
विना अहाँक अहँक ई तन मन जीवन अछि निष्प्राण।



जीवन-सोना

मायल नहि जायत कंठस्वर, संगीत मुखर ता होयत कोना ?

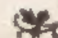
दुखक ज्वालाकेर ताप बिना जीवन-सोना नहि शुद्ध होअय,
अज्ञान-अन्हरियामे ठेसाय मानव-मन की न प्रबुद्ध होअय ?

हारहु लय जँ तैयार न छी तँ जीत मुखर ता होयत कोना ?
मालाक सुरभिसँ मातल जग-मालाक वेदना की जानय,

मधुमासक संगी-अलि, कोकिल शिशिरक पीड़ाकेँ की मानय ?
बेड़ल नहि जायत काँट लगा, उद्यान सुघर ता होयत कोना ?

सुगा किए जपइछ राम नाम, पिजरामे जेँ अछि बन्दी ओ ?
काकक कर्कशता निन्दनीय, स्वच्छन्द फिरै अछि की तेँ ओ ?

बाझल चिन्तनमे अन्तर्मन, साधना मुखर नहि होयत ओना,
मायल नहि जायत कंठस्वर, संगीत मुखर ता होयत कोना ?



एहि खन चान क्षितिज पर आयल

एहि खन चान क्षितिज पर आयल !
मनक उदधिमे सुधि लहरायल !

प्रियक पदध्वनि चीन्हल-जानल,
सभ संकेत सहज अनुमानल।

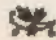
सुनल बोल प्रीतिक जे अनुक्षण
आइ श्रवण-पथसँ टकरायल !
एहि खन चान क्षितिज पर आयल !

डोपटा प्रियक निठाह इजोरिया,
झँपल मनक सन्ताप-अन्हरिया।

दुलित फूल-पातक स्वर-सौरभ,
प्रियक निसासेँ मधु मिझरायल !
एहि खन चान क्षितिज पर आयल !

आँखिक सीढ़ी दऽ क्यो उतरल,
हृदयासन पर सस्मित बैसल।

अंग-अंग उल्लास तरंगित,
मधुक कलश छुबिते औंघड़ायल !
एहि खन चान क्षितिज पर आयल !
मनक उदधिमे सुधि लहरायल !



अभिलाषा

जीबि रहल छी किए' ने बूझी, जीवन ई असहाय,
विश्व-धारमे एकसर नाविक, निर्बल औ निरुपाय।

डेग-डेगपर भोकि रहल अछि काम, क्रोध औ लोभ,
घेरल छी दुर्गम ग्लानिसँ, चढ़ल करेजा क्षोभ।

होयत कहिया अन्त न जानी जीवनकेर ई भार,
नहि जानी पहुँचत ई कहिया नाव सागरक पार।

ताकि रहल छी युग-युगसँ भेटय किछुओ आलोक,
अन्तहीन जनु हमर प्रतीक्षा दऽ रहले नित शोक।

सांसारिक लक्ष्यक पाछाँ हम रहलहुँ बहुत बेहाल,
भेटल बहुत, बहुतमे हुसलहुँ, संघर्षक छल जाल।

सूत्रधार, सामर्थ्य आब नहि, संघर्षक नहि बेर,
अभिलाषा एतबे, ने नचाबी एहि जीवनकेँ फेर।

